© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 11 Issue: 01 | January - March 2020
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in

राष्ट्र निर्माण में शोध की भूमिका

शिवानी चौहान* डॉ॰ गुंजन **
*शोधार्थी , हिंदी विभाग , डॉ भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
**एसोसिएट प्रोफेसर, बी॰डी॰के॰एम॰वी॰ , हिंदी विभाग , डॉ भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

सारांश

प्रस्तुत आलेख एक राष्ट्र के निर्माण मे शोध की क्या भूमिका होती है , के मूल्यांकन का एक प्रयास है । 'राष्ट्र' क्या है? कैसे बनता है? राष्ट्र निर्माण हेतु कौन से कारण उत्तरदायी हैं? इन सभी प्रश्नों के उत्तर पाने की लालसा ही प्रेरणास्वरूप अनुसंधित्सु के ज़हन में आरोपित हुई । किसी भी राष्ट्र के निर्माण के मूल में शिक्षा का अस्तित्व विद्यमान रहता है । जो राष्ट्र जितना अधिक शिक्षित होगा उतना उसका भविष्य सुरक्षित तथा समृद्ध होगा। शोध को शिकशा का उच्चतम सोपान माना जाता है , इसी विचार के फलस्वरूप शोध को यदि राष्ट्र के निर्माण की रीढ़ कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। अत: अनुसंधित्सु का उद्देश्य इस विचार का विधिवत आंकलन करना है। अपने उद्देश्य की प्रतिपूर्ति हेतु भारत के संदर्भ में , राष्ट्र की अवधारणा, राष्ट्र के निर्माण में शिक्षा तथा शोध के महत्त्व को रेखांकित करने तथा शोध के विविध प्रकारों तथा उनके औचित्य के मूल्यांकन का प्रयास किया गया है।

सूचक शब्द

राष्ट्र निर्माण, शोध, शिक्षा,

" यह दीप अकेला
है गर्व भरा मदमाता
इसको भी पंक्ति दे दो"[1]

मनुष्य समाज की मूल इकाई है । मनुष्यरूपी 'दीप' को समाज रुपी 'पंक्ति' में शामिल कर लेने का भाव प्रसारित करती यह पंक्तियाँ मनुष्य से समाज तथा समाज से राष्ट्र निर्माण की द्योतक हैं । 'राष्ट्र' क्या है? कैसे बनता है ? ये प्रश्न सदा ही ज्ञान के समुद्र में गोते खाता नज़र आता है। अमूमन राष्ट्र को देश का पर्यायवाची समझ लिया जाता है हालांकि यह भ्रामक है। 'देश' शब्द के मूल में 'दिश्' धातु है ,उसी से देश तथा देशांतर बना है अतः किसी भौगोलिक परिक्षेत्र में बंधा हुआ वह भू-भाग जिसकी निश्चित सीमा एवं स्थलाकृति हो, देश कहलाता है। परन्तु 'राष्ट्र' एक व्यापक अवधारणा है जो जीवंत तथा सार्वभौमिक है। सत्तर के दशक में होरेस बी.डेविस ने राष्ट्र के एक रूप को ज्ञानोदय से जोड़कर बुद्धिसंगत बताया और दूसरे रूप को संस्कृति और परंपरा से जोड़कर भावनात्मक बताया। समग्र रूप में यदि राष्ट्र को परिभाषित करें तो 'राष्ट्र' किसी भौगोलिक परिक्षेत्र में बंधा हुआ वह भू-भाग है जिसके प्रति उसके निवासियों में सामाजिक ,ऐतिहासिक, सांस्कृतिक,

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 11 Issue: 01 | January - March 2020
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in

मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक आदि विभिन्न रूपों में सम्मान , श्रेष्ठता, आत्मीयता एवं गौरव का भाव परिलक्षित होता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि राष्ट्र के निर्माण हेतु कौन से कारक उत्तरदायी हैं? किसी भी राष्ट्र का निर्माण वहां के लोगों के विकास से जुड़ा होता है। जिस राष्ट्र का सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक पक्ष जितना मज़बूत होगा वह राष्ट्र विकास की राह पर उतनी ही स्थिरता से डटा रहेगा। साथ ही, जिस राष्ट्र का युवावर्ग जितना अधिक शिक्षित होगा उतना ही उस राष्ट्र का भविष्य सुद्रढ़ होगा। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक राष्ट्र अपनी अस्मिता की निरंतरता के लिए शिक्षा को प्रमुख साधन बनाता है। स्पार्टा , जर्मनी, इटली, जापान एवं चीन की शिक्षा इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। इतिहास साक्षी है कि प्राचीन युग में स्पार्टा तथा आधुनिक युग में नासिस्ट जर्मनी एवं फासिस्ट इटली में शिक्षा द्वारा ही वहां के नागरिकों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास किया गया।

शिक्षा राष्ट्र के निर्माण का मुख्य आधार है इसी के मद्देनजर यह ज़रूरी हो जाता है कि जीवन के हर पहलू में विज्ञान, तकनीक तथा शोधकार्य महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएं । विकास की पथ यात्रा तभी सुगम हो सकती है जब आने वाली पीढ़ी के लिए सूचना और ज्ञान आधारित वातावरण बने और उच्च शिक्षा के स्तर पर शोध तथा शिक्षा के पर्याप्त साधन उपलब्ध हों। 'भारतीय विज्ञान कॉंग्रेस' के 106 वें अधिवेशन में ' भविष्य का भारत : विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी' विषय पर बोलते हुए माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जय जवान, जय किसान , जय विज्ञान में 'जय अनुसंधान' भी जोड़ दिया था। उनका कहना था कि " यह विज्ञान ही है जिसके माध्यम से भारत अपने वर्तमान को बदल रहा है और अपने भविष्य को सुरक्षित रखने का कार्य कर रहा है।"[2]

इसमें दो राय नहीं है कि शोध के क्षेत्र में भारतीय वैज्ञानिकों ने प्रौद्योगिकी विकास तथा राष्ट्र के निर्माण के साथ गहरी मौलिक अंत:दृष्टि के एकीकरण का शानदार उदाहरण प्रस्तुत किया है परन्तु क्या विज्ञान और प्रौद्योगिकी विकास ही राष्ट्र के विकास का आधार हैं? शोध को सतत् तथा वैज्ञानिक प्रक्रिया कहा जाता है परन्तु उसकी यह सतत् प्रकृति तकनीक एवं प्रौद्योगिकी के साथ-साथ मानव जीवन के व्यवहारिक पहलुओं का भी समग्र रूप है । *यूनेस्को (UNESCO)* के अनुसार, 'ज्ञान के भंडार को बढ़ाने के लिए योजनाबद्ध ढंग से किए गये सर्जनात्मक कार्य को ही रिसर्च यानि अनुसन्धान एवं डेवलपमेंट यानि विकास कहा जाता है। इसमें मानव जाति , संस्कृति और समाज का ज्ञान शामिल है और इन उपलब्ध ज्ञान के स्रोतों से नए अनुप्रयोगों को विकसित करना ही अनुसंधान का मूल उद्देश्य है।' इस विचार की परतें खोलें तो हम पाएंगे कि वह शोध जो सफ़ेद कोट पहन कर लैब में किया जा रहा है ,वही विकास की ओर अग्रसर नहीं है बल्कि गली-गली घूमकर , लोगों की जानकारी जुटाकर , प्राचीन ग्रंथों को टटोल कर, खुदाई आदि व्यवहारिक स्तर के जो शोध हैं, वह भी स्तरीय हैं क्योंकि वह हमारे राष्ट्र की संस्कृति और गौरव का संरक्षण कर रहे है।

अधिक तह में जाने के लिए हम शोध को निम्नलिखित तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं:-

1- ऐतिहासिक शोध, 2- वर्णनात्मक शोध , 3- प्रयोगात्मक शोध

ऐतिहासिक शोध का संबंध भूत से है तथा यह भविष्य को समझने के लिए भूत का विश्लेषण करता है। जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार "ऐतिहासिक शोध का संबंध ऐतिहासिक समस्याओं के वैज्ञानिक विश्लेषण से है ।" [3]

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 11 Issue: 01 | January - March 2020
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in

भारत की ज्ञान परंपरा , दार्शनिक विचार, पुरातत्व आदि इसी के अंतर्गत आते हैं। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो की सभ्यताएं ; महात्मा बुद्ध के , विवेकानंद के, शंकरचार्य आदि के दार्शनिक मंथन ; प्राचीन ग्रंथो जैसे वेद, पुराण , उपनिषद् ,लिपि, हस्तलिखित ग्रन्थ ; प्राचीन चित्रकला, सिक्कों आदि के विधिवत अध्ययन ने राष्ट्र-निर्माण के स्तर पर पूरे विश्व के सम्मुख भारत की संस्कृति तथा सभ्यता का लोहा मनवाया है। भारत के मानव संसाधन विकास मंत्रालय की स्वायत्त संस्था **'भारतीय इतिहास अनुसन्धान परिषद् '(ICHHR)** ऐतिहासिक शोध को बढ़ावा देने हेतु समय-समय पर विभिन्न योजनाओं का सूत्रपात करती रहती है।

वर्णनात्मक शोध शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में व्यापक स्तर पर व्यव्हार में आता है जिसका संबंध आमतौर पर वर्तमान से ही होता है। यह मुख्य तौर पर मानव व्यवहार के विभिन्न पक्षों आंकलन करता है । जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार, "वर्णनात्मक अनुसन्धान का संबंध परिस्थितियाँ जो वास्तव में वर्तमान हैं , अभ्यास जो चालू हैं, विश्वास , विचारधारा जो पाई जा रही है , प्रतिक्रियाएं जो चल रही हैं , अनुभव जो प्राप्त किए जा रहे हैं अथवा नयी दिशायें जो विकसित हो रही हैं, से है।" [4] जनसंख्या के आंकड़े जुटाना हो या शिक्षा के स्तर का मूल्यांकन , व्यक्ति की प्रवृत्ति हो या सम्पूर्ण जाति की, सभी इसी के अंतर्गत आते हैं। इसके विधिवत अध्ययन हेतु मानव संसाधन विकास मंत्रालय की स्वायत्त संस्थाएं , **'भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्' (ICPR), 'भारतीय उच्चतर अनुसन्धान परिषद्' (IIAS), 'भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद्' (ICSSR) तथा 'राष्ट्रीय ग्रामीण संसथान परिषद्'(NCRI)** आदि उल्लेखनीय हैं।

प्रयोगात्मक शोध एक उन्नत विधि है जिसके अंतर्गत किसी सूक्ष्म समस्या का सूक्ष्म समाधान किया जाता है । इस प्रकार का शोध आविष्कारों का भंडार होता है । *इंडियन साइंस एंड रिसर्च डेवलपमेंट इंडस्ट्री रिपोर्ट 2019* के अनुसार 'भारत बुनियादी अनुसन्धान (fundamental research) के क्षेत्र में विश्व की तीसरी सबसे बड़ी शक्ति है' । भारत ने शून्य बनाया, चिकित्सा के क्षेत्र में भारतीय आयुर्वेद पूरे विश्व का चहीता है, यही नहीं आज तो भारतीय विज्ञान चंद्रमा की रेखाओं पार कर मंगल तक पहुँच चुका है । भारत राष्ट्र के निर्माण में तकनीक तथा प्रौद्योगिकी का स्तर अपरिहार्य है।

यह कदापि अतिशयोक्ति न होगी की यदि शोध न हो तो कोई भी राष्ट्र रीढ़ विहीन है। न तो वहां की जनता और न ही प्रशासन उन्नति की राह पर आगे बढ़ सकता है। शोध के महत्त्व को रेखांकित करते हुए माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी ने अपने एक व्याख्यान में कहा था कि ' हमारे देश को गरीबी से बाहर निकालने , बेहतर स्वास्थ्य एवं सेहत सुनुश्चित करने तथा खाद्य एवं ऊर्जा की ज़रूरतों को पूरा करने में शोध और नवोन्मेष महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं—शोधकार्य को आगे बढ़ने के लिए शोधकर्ताओं मी सतत् प्रतिबद्धता एवं संस्थागत समर्थन की आवश्यकता होती है क्योंकि शोध नौ से पांच का कार्य नहीं है ।' यह बात यहाँ सटीक बैठती है कि शोध किसी भी राष्ट्र के गौरव का मानदंड है।

अतः एक 'दीप' रुपी व्यक्ति की शोध अभिवृत्ति का प्रकाश ही राष्ट्र रुपी 'पंक्ति' को इस कदर प्रज्जवलित करने का सामर्थ्य रखता है कि उसकी द्युति से समस्त विश्व उदीप्त हो उठता है।

<u>उद्धरण</u> :-

1- सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', 'यह दीप अकेला' कविता , 'सादनीरा'(अज्ञेय ग्रंथावली) में संकलित

2- लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित 'भारतीय विज्ञान कॉंग्रेस' के 106 वें अधिवेशन में प्रधानमंत्री के व्याख्यान का अंश, जनवरी 2019

3- John w. Best & James N. Kahn , ' Research in Education', 6th edition, 1989 , पृष्ठ 450

4- वही

सहायक स्रोत :-

1- John w. Best & James N. Kahn , ' Research in Education', 6th edition, 1989.

2- डॉ विनय मोहन शर्मा , 'शोध प्रविधि', नेशनल पब्लिशिंग हाउस , नई दिल्ली ,

3- 'स्वतंत्र भारत में राजनीति', पाठ्य पुस्तक कक्षा बारहवीं , NCERT

4- ऑनलाइन लाइब्रेरी (NATIONAL LIBRARY OF AUSTRALIA, इ- पुस्तकालय)

5- विकिपीडिया